# मृदुला गर्ग व चित्रा मुद्रल की कहानियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन

**पीएच. डी. की शोध उपाधि हेतु**

**ज्योति विद्यापीठ महिला महाविद्यालय, जयपुर**

**प्रस्तावित शोध.प्रबंध की रूपरेखा**

## हिंदी विभाग

## (कला संकाय)

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''


**शोध निर्देशक**

**डॉ० निरुपमा हर्षवर्धन**

**शोधार्थी**

**सुनीता**

**रजि.न.** JVR-11-21-593

**मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग**

**प्रबंधन एवं मानविकी संकाय**

**ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर**


**सत्र** 2021–2022

प्रकरण : “मृदुला गर्ग व चित्रा मुद्ग्ल की कहानियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन”

# अनुक्रमाणिका


1. प्रस्तावित शोध का परिचय एवं महत्व
2. प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध कार्य का विवरण
3. समस्या का औचित्य
4. समस्या कथन
5. शोध के उद्देश्य
6. शोध विधि
7. अध्याय योजना
8. उपसंहार
9. संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं

## 1. प्रस्तावित शोध का परिचय एवं महत्व

प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ प्रक्रिया से प्रभावित रहा है। विकास का आधार सामाजिक चेतना के रूप में प्रथम माना गया है। समाज की आर्थिक प्रवृत्तियां संपूर्ण जीवन को केवल एक पक्ष के लिए प्रभावित करती है परंतु सामाजिक चेतना या जागृति समाज के विकास के लिए प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती है। साहित्य और साहित्यकारों ने सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम इस दृष्टि को समाज का हिंदी भाषा क्षेत्र कह सकते है। क्योंकि हम संपूर्ण राष्ट्र की वार्ता एक भाषिक होते हुए करते है। जहाँ समाज का स्वरूप एक समान है, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय समाज में सामाजिक चेतना को व्यापक फलक पर पहुंचाने के लिए हिंदी साहित्य का विशेष योगदान रहा है। आदिकाल से लेकर अब तक के समय में अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए है। साहित्य के माध्यम से लेखक पाठक के मन को जागृत कर उसमें समाज के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करता है। साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक चेतना के उस रूप का उदय हुआ, जो उसने भोगा था पर दूसरे उससे अनभिज्ञ थे। युगों के साथ-साथ सामाजिकता के तेवर भी बदलते हुए चले गए। कथा साहित्य के द्‌वारा यह दिखाया जाता है कि वर्तमान पूंजीवादी समाज में शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरों का भीषण शोषण हो रहा है। जब तक

व्यक्ति यह समझता है कि वह असल कमाऊ है तब तक कमाने योग्य उसके पास कुछ भी बचता ही नहीं है। जब गरीब मजदूरों का शोषण होता है तो वह समाज में एक भिन्न प्रकार के शोषण को दर्शाता है। समाज में इसी प्रकार प्रथम चरण की विचारधारा का मानना था कि स्त्री और पुरुष के स्वभाव में मूलभूत अंतर नहीं है जो समाज में दर्शाया जाता है परंतु साहित्यस्वरूप तथा कथाकारों ने इन सभी तथ्यों का भरपूर विवेचन किया है कि समाज में प्रधानता प्राप्त केवल पुरुष है और स्त्री सदैव विमर्श को दर्शाती है। सारा मसला ऐतिहासिक प्रभुत्व और संस्कार का है। पूरी दुनिया में स्त्रीवाद पहले पहल पितृसत्ता के विरुद्ध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था। जिसका मुख्य मुद्दा स्त्री को वह अधिकार दिलाना था जो पुरुष को प्राप्त थे पर स्त्री को नहीं। यह सामाजिक चेतना साहित्य के माध्यम से सर्वोपरि रूप में समक्ष आई है।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। जिससे समाज को प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ-साथ सूचना तथा मनोरंजन प्राप्त होता है। साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को बड़े सुंदर शब्दों में पिरोया जाता है। समाज में वर्णित साहित्य सदैव समानता पर बल देता है। जिसमें पूंजीपति, मजदूरो एवं स्त्री को समान महत्व दिया जाता है। हम नकार नहीं सकते है कि साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है। समाज में घटित घटनाएं, प्रसंग संवेदनाएं ही साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। साहित्यकार अपनी

**सामर्थ्यशीलता के बलबूते पर उन्हें ही शब्दों का जामा पहनाता है। आठवें दशक में अनेक लेखिकाओं ने साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज की किंतु जिन्होंने विषय विविधता, लेखन में विशिष्ठता और शैली - शिल्प द्वारा समाज को चेतन स्वरूप में जागृति प्रदान की उनमें कुछ नाम अग्रणी रहे है। जैसे मृदुला गर्ग, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, नासिरा, सुधा चतुर्वेदी आदि । महिला कहानीकारों के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना के जो तथ्य दिखाई दिए है वह अब से पूर्व थोड़े फीके थे। महिला कहानीकारों ने छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से समाज का वास्तविक चित्रण, यथार्थ दिशा आदि का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा विविध ज्वलंत प्रश्नों को भी उन्होंने साहित्य के केंद्र में रखा है जहां समाज के वास्तविक रूप को जागृत करने के लिए कथाकारों ने संजीव चित्रण स्थापित किया है। एक और मध्य वर्ग और निम्न वर्ग उनकी कहानियों के केंद्र में रहा तो दूसरी और मानवीय मूल्यों का हनन, युवा पीढ़ी की बेरोजगारी, दांपत्य एवं दांपत्येत्तर संबंध, प्रताड़ित नारी की वेदना, कामजनित कुंठाएं, सामाजिक आर्थिक वैषम्य, अभिशप्त वृद्धावस्था, आम आदमी की जागरूकता तथा विद्रोह जैसे विविध विषयों पर साहित्य सृजन कर कहानीकारों ने अपनी रचनाधर्मिता निभाई है। यह कहना की अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 'मृदुला गर्ग' और 'चित्रा मुद्गल' की कहानियाँ अनेक महिला कथाकारों की तरह सास बहु के आंसू तोड़**

प्रसंग से अलग हटकर हैं और सिर्फ नारी जीवन पर ही केंद्रित नहीं है। इन्होंने मानव जीवन के विविध पक्षों को विभिन्न कोणों में छुआ है और हिंदी साहित्य को कुछ अविस्मरणीय कहानियाँ दी है। यह कथन प्रमाणित करता है की कहानियों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

समाज में जैसे-जैसे बदलाव आता गया और जिसने मानव समाज को केवल प्रभावित ही नहीं किया, परिणाम भी डाला उसकी सशक्त अभिव्यक्ति उन्होंने की है। जिन विषयों को केवल लज्जा का विषय माना जाता था। जो विषय सिर्फ पुरुष का क्षेत्र थे उन विषयों को भी मृदुला गर्ग तथा चित्रा मुद्‌गल ने स्पर्श किया है।

पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण ने मानवीय संबंधों के बीच दरार उत्पन्न कर दी है। व्यक्तिवादी वृत्ति एवं स्वार्थपरता के कारण युवा पीढ़ी दायित्वहीन होती जा रही है। परिणामतः भीड़ के बीच भी व्यक्ति अकेलेपन का शिकार है। इन सारी स्थितियों को मृदुला गर्ग तथा चित्रा मुद्‌गल ने अपनी वाणी दी है। इनकी कहानियों में निम्नवर्गीय दयनियता के साथ-साथ उसका विद्रोह भी अभिव्यक्त हुआ है। उच्च वर्ग के दोगली वृत्ति पर करारा प्रहार करती है। वे समाज के कुछ लोगों के लिए यह कहती है कि यहां खाने के दांत और तथा दिखाने के दांत ओर है। ऊपरी तौर पर संवेदनशीलता होती है लेकिन अंदर से वे काईया प्रवृत्ति के होते है। लेखिकाए अनेक सामाजिक समस्याओं में

आधुनिक युग की विसंगतियों से समाज को रूबरू करवाकर उसका निवारण करना चाहती हैं

उपर्युक्त विवरण में मृदुला गर्ग तथा चित्रा मुद्गल की कहानियां द्वारा प्रेरित सामाजिक चेतना के समस्त भागों का वर्गीकरण किया गया है अतः इन्हीं कारणों की विस्तृत व्याख्या का अध्ययन करने हेतु उपरोक्त शोध समस्या "मृदुला गर्ग व चित्रा मुद्गल की कहानियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन" का चयन किया गया है।

## 2. प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध कार्य का विवरण

किसी भी शोध कार्य के लिए उस शोध के साहित्य पक्ष की समीक्षा करना अनिवार्य होता है जिसके कारण साहित्य जगत में निहित किए गए कार्य जो प्रयुक्त शोध समस्या से संबंधित हो उनकी व्याख्या की जा सके। किसी भी नवीन शोध कार्य के लिए पुराने संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है जिसे संबंधित साहित्य की समीक्षा कहा जाता है।

1. अंकित मिश्रा, मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री अस्मिता का सामाजिक वर्गीकरण' कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश ।

## उद्देश्य

- मृदुला गर्ग की कहानियों में निहित स्त्री विमर्श का अध्ययन करना

- मृदुल करके कहानियों में निहित नारी के समाजीकरण का अध्ययन करना
- मृदुल करके कहानियों में निहित सामाजिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना

**निष्कर्ष :**

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के सूक्ष्म चित्र प्राप्त होते है। उनकी कहानियों में स्त्री के खंडित होते हुए जीवन, संभोग और कुंठाओं के फलस्वरूप स्वरुप टूटते संबंधों के द्वारा समाज में स्त्री की प्रत्येक सामाजिक परिस्थिति का वर्णन किया गया है। मृदुला गर्ग में अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री के सामाजिक जीवन के तमाम रंग उकेर दिए है।

2. पायल कश्यप, 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त समाज का आर्थिक स्वरूप' राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान ।

**उद्देश्य**

- चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में निहित समाज के स्वरूप का अध्ययन करना
- चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में निहित समाजीकरण के तत्वों का अध्ययन करना

➢ चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में निहित समाज के आर्थिक स्वरूप का अध्ययन करना ।

## निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल की कथाओं में आज का वैश्विक सामाजिक परिदृश्य आर्थिक नियोजन का अनुगामी बनकर संचालित हो रहा है। आज विकास की अवधारणा सुनियोजित और सुविचारित अर्थतंत्र पर आधारित है जिस कारण आधुनिक समाज के ढांचे के स्वरूप जबरदस्त परिवर्तन की ओर जा रहे है।

3. पुष्पलता अग्रवाल, 'मृदुला गर्ग की कहानी साहित्य : विविध आयाम, दयानंद कला महाविद्यालय, हिंदी विभाग लातूर ।

## उद्देश्य

➢ मृदुला गर्ग के कहानी साहित्य का अध्ययन करना।

➢ मृदुल गर्ग के कहानी साहित्य के विविध आयामों का अध्ययन करना।

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समाज के विविध पहलुओं को मृदुला गर्ग जी ने कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आम आदमी के संघर्ष से लेकर धन संपन्न भ्रष्ट व्यक्ति की विलासिता की झांकी उनकी कहानियों में देखी जा सकती है।

4. **सुप्रिया** (2019), **वंशज उपन्यास में सामाजिक चेतना:मृदुला गर्ग**', **एम. जी. जी. पी. जी. महाविद्यालय**, **बादलपुर जी. बी. नगर।**

## उद्देश्य

- **वंशज उपन्यास के माध्यम से मृदुला गर्ग के सामाजिक विचारों का अध्ययन।**
- **वंशज उपन्यास के माध्यम से मृदुला गर्ग की सामाजिक चेतना का अध्ययन**
- **वंशज उपन्यास के माध्यम से मृदुला गर्ग कि सामाजिक चेतना की प्रासंगिकता का अध्ययन।**

## निष्कर्ष

**मृदुला गर्ग का उपन्यास 'वंशज' समाज की वास्तविकता को दर्शाता है। निः संदेह मृदुला गर्ग आधुनिक जीवन के नए यथार्थ को अग्रणी करती हैं। उन्होंने स्त्री के संघर्ष के जरिए समाज में एक ऐसा संघर्ष व्याप्त किया, जो प्राचीन रुढियों व प्राचीन आदर्शों को नया रूप प्रदान करता है।**

5. **ज्योति शर्मा** (2018)-**आलेख**: **मृदुला गर्ग के उपन्यास में अभिव्यक्त स्त्री समाज संघर्ष' जवाहरलाल नेहरू विद्यालय नई दिल्ली।**

**उद्देश्य :**

- **आलेख : मृदुला गर्ग के उपन्यास में अभिव्यक्त समाज संघर्षों का अध्ययन।**
- **आलेख: मृदुला गर्ग के उपन्यास में अभिव्यक्त समाज में स्त्री के संघर्षों का अध्ययन।**
- **आलेख: स्त्री विमर्श का अध्ययन।**

**निष्कर्ष :**

**आलेख में पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुष का रवैया किस प्रकार से उभर कर सामने आता है यही बिंदु सर्वश्रेष्ठ स्त्री को दयनीय स्थिति का प्रचार करते हुए समाज में होने वाले सबसे बड़े स्त्री-पुरुष संघर्षो को दर्शाता है।**

6. **मिश्रा इंदुबाला** (2018): **मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन' बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी।**

**उद्देश्य :**

- **मृदुला गर्ग के उपन्यासों का अध्ययन करना।**
- **मृदुल करके उपन्यासों में निहित सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करना।**

- **मृदुल करके उपन्यासों में निहित सामाजिक जीवन के तत्वों का अध्ययन करना।**

**निष्कर्ष** :

**मृदुला गर्ग के उपन्यास भारतीय परंपराओं के अनुरक्त सामाजिक जीवन में रूढ़िवादिता के परिदृश्य को दर्शाते हुए समाज में व्याप्त जीवन का विश्लेषण करते है, जो वास्तविक एवं यथार्थ समाज में होने वाले प्रत्येक कृत के लिए भूमिका का निर्वहन कर रहे है।**

7. **चौहान कमल** (2017): '**साठोत्तरी कहानियों के द्वारा: मृदुला गर्ग एवं रामदरश मिश्र का विश्लेषण' महात्मा गांधी विश्वविद्यालय ।**

**उद्देश्य**

- **साठोत्तरी कहानियों के रचनाकारों का अध्ययन ।**
- **मृदुला घर की कहानियों का अध्ययन ।**
- **रामदरश मिश्र की कहानियों का अध्ययन ।**
- **साठोत्तरी कहानियों का विश्लेषण मृदुला गर्ग एवं रामदरश मिश्र के संदर्भ में।**

**निष्कर्ष**:

**मृदुला गर्ग की कहानियों में जहां एक और स्त्री वर्ग की विभिन्न कमजोरियों, निरंतर होते आ रहे हैं उसके उत्पीड़न को कार्य सहित दर्शाया गया**

**है वहीं रामदरश की कहानियों में समाज के स्वरूप, आधुनिक समाज की कल्पना एवं बदलते सामाजिक परिवेश का विश्लेषण किया गया है।**

8. **बिस्ट, रेखा** (2017) '**चित्र मुद्गल की कहानियों में चित्रित सामाजिक मूल्य' केरल विश्वविद्यालय, तिरुवंतपुरम ।**

**उद्देश्य -**

- **चित्रा मुद्गल की कहानियों का वर्षानुरूप अध्ययन करना।**
- **चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित विशेषताओं का अध्ययन करना।**
- **चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना ।**

**निष्कर्ष :**

**निष्कर्ष पाया गया कि प्रत्येक युग का सामाजिक राजनीतिक आर्थिक स्वरूप निश्चित होता है जहां स्वरूप के अनुसार ही वहां मूल्य का स्पष्टीकरण किया जाता है चित्र मुद्दा की कहानियों में समानता सहयोग सद्भावना सामाजिक विकास आदि सामाजिक मूल्यों का चित्रण किया गया है जो समाज के मूल्यों को दर्शाता है।**

**9.** **शर्मा, पंकज** (2016), '**चित्रा मुदगल के उपन्यासों में निहित सामाजिक संघर्ष एवं प्रेरणा का अध्ययन, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय।**

**उद्देश्य** :

- **चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों का अध्ययन।**
- **चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष।**
- **चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में सामाजिक प्रेरणा ।**

**निष्कर्ष :**

**निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि संघर्ष एवं प्रेरणा समाज कि केंद्रीय शक्ति है। संसार के सभी कार्य संघर्ष एवं प्रेरणा पर ही आधारित है। सामान्यतः संघर्ष एवं प्रेरणा की दृष्टि से समाज को विकसित समाज कहा जाता है। वर्तमान में सामाजिक संघर्ष एवं प्रेरणा समाज के उत्थान पतन दोनों के कारण एवं प्रतिफल है।**

**10.** **गर्ग**, **सुशील** (2015) '**आधुनिक हिंदी कहानियों में सामाजिक चेतना**' **बुंदेलखंड विश्वविद्‌यालय।**

**उद्देश्य**

- **आधुनिक हिंदी कथाकारो का अध्ययन करना।**
- **आधुनिक हिंदी कथा लेखिकाओं का अध्ययन करना ।**

आधुनिक हिंदी कहानियों में निहित सामाजिक चेतना का अध्ययन करना । निष्कर्ष : समाज एवं साहित्य एक साथ चलने वाले दो समान एवं भिन्न पहलू है। कभी समानता समाज का वास्तविक चित्रण कराती है तो कभी भिन्नता उनमें चित्रित असभ्यक कृत्यों का वर्णन करती है। परंतु साहित्य समाज में सदैव सकारात्मक बदलाव की भावनाओं को प्रणित करता है जो सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति कर समाज को स्वास्थ्य, सभ्य, सफल एवं श्रेष्ठ बनाती है।

## 3. समस्या का औचित्य :-

वर्तमान समय में सामाजिक चेतना सभी पहलुओं को निर्धारित करने वाला समाज के लिए केंद्र बिंदु बन गया है। सामाजिक परिदृश्य में मनुष्य के जीवन को बदल दिया गया है। आज भारतीय सामाजिक व्यवस्था को आदर्शवादी माना जाता है क्योंकि समाज में सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन एक समान रूप से हो रहा है। सामाजिक संबंध मान्यताओं पर आधारित है तथा मान्यताएँ साहित्य के साथ-साथ अग्रसर होती है। समाज का वितरण असमान है जहाँ किसी भी प्रकार की व्यवस्था भिन्न रूप में परिलक्षित होती है। पहले जहाँ आपसी संबंध नैतिकता एंव मान्यताओं पर आधारित थी, आज उनका स्थान सामाजिक चेतनाओं के रूप में विशिष्ट प्रकार से प्रदर्शित होता है। समाज में किसी भी प्रकार की व्यवस्था तथा अव्यवस्था को केवल चेतना के

द्वारा ही स्पष्टीकृत किया जा सकता है। समाज में होने वाले आधुनिक कृत्य समाज की छवि बदल रहे है। समाज में सामाजिक चेतना प्रसारित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन साहित्य है अतः प्रस्तुत शोध कार्य में मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में निहित सामाजिक चेतना के तत्वों पर अध्ययन किया जा रहा है जो वर्तमान समय में औचित्यपूर्ण है।

## 4. समस्या कथन :

"मृदुला गर्ग व चित्रा मुद्गल की कहानियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन"

## 5. शोध के उद्देश्य :

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा प्रकट किया जा रहा है--

- मृदुला गर्ग जी एवं चित्रा मुदगल जी के जीवन से पाठकों को अवगत कराना।
- मृदुला गर्ग जी एवं के चित्रा मुद्गल कीजिए के रचना संसार पाठ को अवगत कराना ।
- मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में निहित सामाजिक चेतना का अध्ययन करना।

- मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में निहित सामाजिक चेतनाओं की तुलना का अध्ययन करना।
- मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में निहित सामाजिक चेतनाओं के तुलनात्मक अध्ययन का विश्लेषण करना।

## 6. शोध विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में आलोचनात्मक एवं वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

## 7. अध्याय योजना

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम अध्याय | : | सामाजिक चेतना का स्वरूप। |
| द्वितीय अध्याय | : | मृदुला गर्ग का जीवन और रचना संसार। |
| तृतीय अध्याय | : | चित्रा मुद्गल का जीवन और रचना संसार। |
| चतुर्थ अध्याय | : | मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुद्गल की कहानियों में सामाजिक चेतना। |
| पंचम अध्याय | : | मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुद्गल की कहानियों में निहित सामाजिक चेतना की तुलना। |
| षष्ठम अध्याय | : | शोध निष्कर्ष एवं सुझाव |

## 8. उपसंहार :

समाज और साहित्य दोनों में बहुत गहरा प्रेम तथा संबंध है। एक में दूसरे का रूप परिलक्षित होता है। साहित्य चेतना का विकास मानव सहानुभूति के द्‌वारा समाज में दर्शाया जाता है तथा सामाजिक चेतना का विकास साहित्यिक चेतना के द्‌वारा दर्शाया जाता है। साहित्य समाज की प्रेरणा बनकर एक नवीन मार्ग समाज को दर्शाता है इस तरह से समाज और साहित्य एक दूसरे के उत्तरदायित्व का सफल निर्वहन करते है। हिंदी कथा साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में भारतीय समाज का विशद् अंकन करते हुए समाज के प्रत्येक क्रम को दर्शाया है। संयुक्त परिवार, खेत- किसान, स्त्री-पुरुष समाज के अत्यंत स्पष्ट एवं सुंदर चित्र प्रस्तुत किए गए है।

सामाजिक चेतना के उजागरता से ही स्त्री-पुरुष परस्पर की भावनाओं, संवेदनाओं को स्वीकार कर पाएंगे, सम्मान कर पाएंगे और एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। नारी को अपनी अस्मिता अपनी चेतना को उजागर करने का प्रयत्न मृदुला गर्ग तथा चित्रा मुद्‌गल दोनों के द्‌वारा अपने साहित्य में भरपूर किया गया है। इसी पुष्टि से अब तक औरत के बारे में, समाज के बारे में पुरुष ने जो भी कुछ लिखा है उसे पर शक किया जा सकता है, क्योंकि लिखने वाला न्यायाधीश और अपराधी दोनों है। क्योंकि साहित्य के माध्यम से समाज में परिवर्तन होते रहे है और आगे भी होते रहेगें। इसका

निर्माण समाज में नवीन संस्कारों के आधार पर, समाज की प्रवृत्ति और स्वभाव के आधार पर साहित्य सदैव करता रहा है। समाज में सामाजिक चेतना द्वारा ही सामाजिक दृष्टि में सार्थक बदलाव लाया जा सकता है जिसका वर्णन मृदुला गर्ग तथा चित्रा मुद्गल ने वास्तविक रूप में किया है।

## 9. संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं –


1. मृदुला गर्ग 'कठगुलाब' उपन्यास |
2. मृदुला गर्ग 'वंशज' उपन्यास ।
3. भूमंडलीकरण और साहित्य लेख, प्रभाकर क्षोत्रीय ।
4. हंस पत्रिका - जुलाई 2015।
5. हंस पत्रिका -- सितंबर 2005 |
6. दिक्षित प्रभा 'स्त्री अस्मिता के सवाल' साहित्य निलय कानपुर, 2011।
7. मृदुला गर्ग व्यक्तित्व और कृतित्व, सं दिनेश द्विवेदी, पृष्ठ - 1 ।
8. चूकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग ।
9. स्वातंत्रयोत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण, डॉ हेमेंद्र कुमार पानेरी।
10. चर्चित कहानियां पाठकों की सत्ता में, चित्रा मुद्गल ।
11. मामला आगे बढ़ेगा कहानी संग्रह -- चित्रा मुद्गल ।

12. डॉ. सुरेश सिंहा, हिंदी उपन्यास ।

13. आदि-अनादि - भाग - 2, चित्रा मुद्‌गल ।

14. मुद्‌गल चित्रा, एक जमीन अपनी, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2016

15. साहित्य और जीवन, मैक्सिम गोर्क ।

16. हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि- स्त्री विमर्श, पृष्ठ संख्या-131,133।

17. किरणबाला अरोड़ा, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी,

18. स. विपिन बिहारी ठाकुर, 'प्रकर' (मासिक) मार्च 12,

19. मृदुला गर्ग, शहर के नाम,

20. वही, ग्लेशियर से,

21. वही, शहर के नाम,

22. इंद्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिंदी साहित्य,

23. मृदुला गर्ग, शहर के नाम,

24. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से,

25. प्रेमचंद, वरदान,

26. मृदुला गर्ग, शहर के नाम,

27. **शीलप्रभा वर्मा**, **महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ**

28. **महादेवी वर्मा**, **शृंखला की कड़ियाँ**